इकाई 9 विकास की धारणाएं

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 विकास में पर्यटन के स्थान का निर्धारण
9.3 परिरक्षण और विकास
9.4 संरक्षण और विकास
9.5 सहभागिता और विकास
9.6 टिकाऊ विकास
9.7 सारांश
9.8 शब्दावली
9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- विकास प्रक्रिया में पर्यटन की भूमिका को समझ पाएँगे और इसका विश्लेषण कर सकेंगे,
- विकास के विभिन्न प्रतिरूपों के बारे में जान सकेंगे,
- पर्यटन विकास के विभिन्न प्रतिरूपों से संबन्धित समस्याओं को समझ पाएंगे, और
- टिकाऊ विकास की संकल्पना समझ सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

पर्यटन का विकास बहुत से कारकों का परिणाम है। इसका प्रमुख उद्देश्य है आर्थिक लाभ प्राप्त करना जैसे विदेशी मुद्रा की प्राप्ति (अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए), आय, रोजगार और सरकारी राजस्व में वृद्धि करना। ये अन्य आर्थिक क्षेत्रों जैसे शिल्प उत्पादन, कृषि, मत्सय-उद्योग, वन उद्योग और निर्माण उद्योग के लिए उत्प्रेरक का कार्य भी करता है और संरचनात्मक सुविधाओं का मूल्य चुकाने तथा उसे उचित ठहराने का कार्य भी करता हैं। ये संरचनात्मक सुविधाएं समाज के अन्य घटकों के काम भी आती हैं और आर्थिक आवश्यकताओं की आपूर्ति भी करती है जिसके बिना शायद संसाधन किसी और तरह प्राप्त न हो पाएं। सामाजिक रूप से पर्यटन सब से अच्छा तरह पर्यटकों और स्थानीय लोगों के लिए मनोरंजन, सांस्कृतिक और व्यापारिक हर प्रकार की सेवाएं और सुविधाएं प्रदान करता है। पर्यटन के बिना ये सेवाएं और सुविधाएं विकसित नहीं होती। ये दूसरी संस्कृतियों और पर्यावरणों के अतिरिक्त स्वयं अपनी राष्ट्रीय धरोहर के विषय में लोगों के लिए शिक्षा के ऐसे अवसर प्रदान करता है जो अकसर सैद्धान्तिक और राजनैतिक मतभेदों का निवारण करते हैं और पारस्परिक सहभागिता द्वारा प्रतिकूल व्यवहार और पारस्परिक विरोधों को भी कम करते हैं।

पर्यटन विकास कई समस्याओं को भी उत्पन्न करता है जैसे संभावित लाभ का अभाव और स्थानीय आर्थिक विकृति, पर्यावरणीय ह्रास, सांस्कृतिक पहचान तथा सम्पूर्णता का अभाव और वर्तमान प्रतिकूल सांस्कृतिक भ्रम को और सबल करना। इस इकाई में पर्यटन के द्वारा हम विकास के इन दोनों पक्षों का विश्लेषण करेंगे।

9.2 विकास में पर्यटन के स्थान का निर्धारण

अगर हम सामान्य विकास में पर्यटन की भूमिका समझना चाहते हैं तो उन समस्त नियमों के सामान्य स्पष्टीकरण की आवश्यकता होगी जिनके अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन उद्योग व्यवहारिक रूप में कार्य करता है। यहाँ हम विशेषकर तीसरी दुनिया के संदर्भ में इसका विश्लेषण करेंगे। विकास में पर्यटन की भूमिका के विश्लेषण के लिए दो प्रमुख दृष्टिकोण विकसित किए गए हैं। एक दृष्टिकोण राजनैतिक आर्थिक उपागम कहलाता है। वह इस सोच पर आधारित है कि पर्यटन का विकास उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक प्रारूप और आर्थिक निर्भरता के

समरूप है। इस विचारधारा के अनुसार उद्योग का रूप विश्व व्यापार के राजनैतिक एवं आर्थिक निर्धारक के अनुकूल होता है। राजनैतिक आर्थिक दृष्टिकोण पर्यटन के प्रभावों की प्रवृत्ति के प्रति नकारात्मक रवैया अपनाता है जिसके कारण यह इसे एक ऐसे माध्यम के रूप में देखता है जिसके द्वारा कम विकसित राज्यों की कीमत पर अधिक धनी राष्ट्र और अधिक विकसित होते जाते हैं।

दूसरा दृष्टिकोण पर्यटन को उसके अपने विभिन्न व्यवहारिक उपखण्डों में देखता है और राजनैतिक व्यंजना रहित विश्लेषण करता है। ये परिप्रेक्ष्य तीसरी दुनिया के समाजों में होने वाले परिवर्तनों और वर्तमान असमानताओं में उद्योग के योगदान के प्रति कोई ध्यान आकर्षित नहीं कराता है। दूसरे शब्दों में यह विश्लेषण की विधि ही है जो तटस्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। यहां सबसे अधिक बल उद्योग के विशेष आर्थिक महत्व पर है जिसमें सारे भागीदार सम्मिलित हैं इसमें उन उपायों पर भी जोर दिया जाता है जो उसकी कार्यक्षमता को बढ़ा सकें और दुष्प्रभावों से बचा सकें। यह व्यवहारिक दृष्टिकोण सामान्य रूप से आशावादी है जो यह मानती है कि बहुत सी समस्यों को अच्छे प्रबंधन और उचित नीति परक कदमों के द्वारा सुलझाया जा सकता है।

फिर भी सिद्धान्तिकरण की इन दोनों विधियों को एक दूसरे के विरोधी दृष्टिकोणों के रूप में देखना बहुत उचित नहीं होगा ये दोनों ही हमारे लिए विषय की विषमता को पूर्णरूप से समझने में सहायक हैं और विश्व पर्यटन में विशेष रूप से तीसरी दुनिया के पर्यटन में प्रमुख भागीदारों की विरोधात्मक अभिरुचि का प्रतिनिधित्व भी करते हैं, अति सरलीकरण के कुछ खतरों के बावजूद हम यह कह सकते हैं कि व्यवहारिक विधि महानगरों वाले प्रमुख राष्ट्रों के आर्थिक उद्देश्यों के अनुकूल तैयार की गई है जबकि राजनैतिक आर्थिक दृष्टिकोण इस उद्योग को तीसरी दुनिया के परिप्रेक्ष्य में एक छोर से देखता है।

बोध प्रश्न 1

1) राजनैतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण से आप क्या समझते हैं।

.....

.....

.....

2) व्यवहारिक दृष्टिकोण के महत्व का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

9.3 परिरक्षण और विकास

विकास का अर्थ केवल आगे बढ़ना नहीं है। इसमें अभी तक प्राप्त की गई उपलब्धियों को बचाये रखने की आवश्यकता भी सम्मिलित होनी चाहिए। चूंकि भविष्य की कल्पना अतीत के अनुभवों पर आधारित होती है, इसलिए कला, संस्कृति आदि की सुरक्षा आवश्यक है। सांस्कृतिक विरासत और कला ने पर्यटन गन्तव्यों के आकर्षण में सदैव योगदान दिया है।

पर्यटन किसी क्षेत्र की सांस्कृति विरासत के महत्वपूर्ण तत्वों के संरक्षण के लिए विशेष प्रेरणा हो सकता है। उनका संरक्षण पर्यटकों के आकर्षण में वृद्धि के लिए उचित बताया जा सकता है और इस में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

- पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक स्थान और रोचक वास्तुशिल्पीय शैलियों का संरक्षण,
- पारंपरिक कलाओं की विरासत, नृत्य, संगीत, नाटक, रीति-रिवाज और समारोह, पहनावे और पारंपरिक जीवन शैलियों के कुछ पहलुओं का संरक्षण और कभी पुन: जीवित करना।
- पारंपरिक कला और कौशल को पुन: जीवित करना जिसमें स्थानीय कौशल और सामग्री का उपभोग करके नए रूपों को विकसित करना
- संग्रहालयों रंगशालाओं और दूसरी सांस्कृतिक सुविधाओं और गतिविधियों के अनुरक्षण के लिए आर्थिक सहायता और सांस्कृतिक उत्सवों के लिए भी आर्थिक सहयोग क्योंकि वह पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण

आकर्षण हैं और स्थानीय निवासियों द्वारा भी इसका उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ रंगशालाओं के पर्यटकों द्वारा क्रय किए गए टिकटों से इन महत्वपूर्ण शहरी केन्द्रों की इन सुविधाओं को आर्थिक लाभ होता है और उन्हें बनाए रखने में सहयोग मिलता है। विश्व के कुछ प्रमुख संग्रहालयों पर पर्यटकों द्वारा दिए गए प्रवेश शुल्क उन संस्थाओं के अनुरक्षण के लिए महत्वपूर्ण आय का प्रबन्ध करते हैं।

जब स्थानीय निवासी यह देखेंगे कि पर्यटक उनकी सांस्कृतिक धरोहर को पंसद कर रहे हैं तो उनमें अपनी संस्कृति से सम्बन्धित एक गौरवपूर्ण विवेक को सुदृढ़ किया जा सकता है बल्कि पुनरूजीवित किया जा सकता है। ये विशेष रूप से कुछ पारंपरिक संस्कृतियों के लिए सत्य है जिनमें सामान्य आर्थिक विकास के कारण परिवर्तन आ रहा है और वह अपने सांस्कृतिक आत्म-विश्वास की समझ खो रहे हैं।

इसके साथ ही इस प्रकार के पर्यटन में विकास से जुड़ी कुछ समस्याएं भी हैं। यदि पर्यटकों की मांगों को संतुष्ट करने के लिए पारंपरिक कलाओं, शिल्पों, रीत रिवाजों और उत्सवों को आवश्यकता से अधिक रूपान्तरित किया गया तो उनका अतिव्यवसायिकरण हो जाएगा और उनमें मौलिकता का ह्रास भी होने लगेगा। उदाहरणार्थ महत्वपूर्ण परम्परागत नृत्यों और संगीत के प्रदर्शनों को, जिनमें से कुछ धार्मिक महत्व के भी हो सकते है, पर्यटकों की रुचि और कार्यक्रमों के अनुकूल घटा दिया जाता है या परिवर्तित कर दिया जाता है। इसी प्रकार उत्कृष्ट पारंपरिक शिल्पों को पर्यटकों द्वारा यादगार स्वरूप ले जाने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादित किया जाता है। ये स्थिति अकसर पर्यटन से अधिकतम लाभान्वित होने की आकांक्षा के कारण उत्पन्न होती है।

इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय रूप से कमजोर पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक स्थानों का अति उपयोग या दुरुपयोग इन आकृतियों को अत्याधिक प्रदर्शन, अधिक आर्दता, कलाकृतिध्वंसन, दीवारों की कारीगरी को खुरच कर लिखने आदि से क्षति पहुंचती है। उदाहरणार्थ अजन्ता और एलोरा की गुफाओं के चित्रों को पर्यटकों की भीड़ के कारण गंभीर क्षति पहुंच रही है।

9.4 संरक्षण और विकास

एक और बात जिसका व्यापक रूप से उपयोग पर्यटन के संदर्भ में किया जा रहा है वह संरक्षण है। ये सामान्यत: विशिष्ट स्थलों, स्थानों और प्राकृतिक संसाधनों के नियोजित प्रबन्धन के संदर्भ में है न कि अनिवार्य रूप से सुस्पष्ट संरक्षण है जिसका अर्थ स्थल, स्थान या संसाधन में परिवर्तन न होना है। कभी कभी इसमें पुरानी परिस्थितियों की बहाली भी सम्मिलित होती है। यदि स्थल, स्थान या संसाधन की मौलिक सम्पूर्णता को बनाए रखा जाए तो संरक्षण के लिए कुछ उपयोगी और सीमित परिवर्तन हो सकता है।

मानव पर्यावरण के विभिन्न घटकों की सुरक्षा, वृद्धि और सुधार पर्यटन के सुव्यवस्थित विकास के लिए मौलिक प्रतिबन्धों में से कुछ हैं। इसी प्रकार सुव्यवस्थित पर्यटन प्रबन्धन काफी हद तक भौतिक पर्यावरण की सुरक्षा और विकास तथा जीवन गुणवत्ता में योगदान दे सकता है। पर्यटन के लिए प्राकृतिक पर्यावरणीय आकर्षणों की प्रमुख श्रेणियां निम्न हैं।

i) जलवायु

ठण्डे शीत ऋतु वाले क्षेत्रों के अधिकांश पर्यटक हलके गरम, सुनहरी धूप और शुष्क मौसम वाले प्रदेशों को विशिष्ट रूप से वांछनीय समझते हैं। इस में कुछ और आकर्षण जैसे मौसम पर आधारित उत्सव या अतिरिक्त भौतिक आकर्षण भी जोड़े जाते हैं जो मनोरंजन के अवसर प्रदान करते हैं। वायु प्रदुषण के नियन्त्रण के द्वारा वांछनीय जलवायु संरक्षण या जलवायु के अनुकूल वास्तुशिल्पीय शैलियां बनाए रखना पर्यटन के लिए अनिवार्य है। जलवायु के आकर्षण को बढ़ावा देने या मुल्यांकन करने में जलवायु की ऋतुनिष्टता को विचाराधीन रखना चाहिए। एक दीर्घकालिक जलवायु संबंन्धी वांछनीय मौसम निश्चित ही पर्यटन के विकास के लिए लाभप्रद होगा क्योंकि इस प्रकार सुविधाओं, सेवाओं और ढांचागत सुविधा में किया गया निवेश उच्चतम सीमा तक बढ़ जाएगा। उदाहरणार्थ ऐसे गन्तव्य जैसे गोआ में पर्यटकों का मौसम सामान्य रूप से सितम्बर-मार्च में हुआ करता था किन्तु अब इसे जून-अगस्त के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है जो "सुनहरे तटों पर मानसून के रूप में पेश किया जा रहा है।

ii) प्राकृतिक सौन्दर्य

किसी क्षेत्र की प्राकृतिक सुंन्दरता उस क्षेत्र में सैर की दृष्टि से जाने के लिए एक प्रमुख प्रेरणा का कारण हो सकती है, विशेष रूप से यदि उसके पर्यावरण के स्वच्छ और प्राकृतिक चरित्र को बनाए रखने के लिए संरक्षण कार्य किया गया हो। दूरस्थ मनोरम क्षेत्र प्राकृतिक या साहसिक क्रीड़ा के शौकीन पर्यटकों

के लिए अवसर प्रदान कर सकते हैं जैसे नदी रेफटिंग शिलारोहन (rock climbing) और लम्बी पद यात्रा (treckking)।

iii) समुद्रीय बालू तट और समुद्री क्षेत्र

विश्व के बहुत से स्थानों पर समुद्री बालू-तट और सम्बद्ध समुद्री क्षेत्रों में सूर्यस्नान, तैराकी, नौक़ायन, विण्ड और बोर्ड सर्फिंग, जल स्कीइंग, पैरासेलिंग, स्नोर्केलिंग और स्कब डाइविंग के अतिरिक्त क्रीड़ा मत्स्यन और अन्य जल सम्बन्धी मनोरंजन की गतिविधियां प्रमुख आकर्षण हैं। इसलिए समुद्री बालू-तट और समुद्री क्षेत्रों में भी तटों के संरक्षण और विकास नियन्त्रण के रूप में संरक्षण के उपाए अपनाने चाहिए।

iv) वनस्पति एवं प्राणी

असाधारण और रोचक वनस्पति एवं प्राणी समूह भी बहुत महत्वपूर्ण आकर्षण हो सकते हैं विशेष रूप से जबकि वह प्राकृतिक सौन्द्रय वाली पृष्ठभूमि में हों। पूर्वी अफ्रीका की शिकारगाहें और केलीफोरनिया के रेडवुड पार्क श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। जहाँ तक वनस्पति और प्राणियों का प्रश्न है प्राणी विहार, जलजीव शालाएं और वनस्पतिक उद्यान भी विशेष आकर्षण के केन्द्र है। यदि पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देना है तो ऐसे क्षेत्रों में उचित संरक्षण उपायों की भी नितान्त आवश्यकता है।

ये स्पष्ट है कि किसी देश या क्षेत्र की आकर्षक विशेषतायें पर्यटन के विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। ये पर्यटन उत्पाद के अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत पर्यटन का विकास पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक संरक्षण की तकनीकों में से एक हो सकता है और किसी क्षेत्र या स्थान की विशिष्ट समझ भी बनाए रख सकते हैं। फिर भी ऐसी परिस्थितियां हैं जहां विशेष प्रकार के आकर्षणों का विकास संभव है जैसे विषय उद्यान या जुआ घर जो उस क्षेत्र के लक्षणों से सम्बन्धित तो नहीं है पर लाभदायिकता की दृष्टि से न्यायोचित हो सकता है। दीर्घकाल में जुए घर (कैसीनो) पर आधारित पर्यटन समाज और पर्यावरण की दृष्टि से विघटनकारी सिद्ध हुआ है। इस प्रकार के पर्यटन से लाभ प्राप्ति कभी प्रमुख उद्देश्य नहीं होना चाहिए क्योंकि प्राकृतिक आकर्षणों का अत्याधिक शोषण प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट कर देगा और परिणामस्वरूप दीर्घकाल में लाभ को कम कर देगा।

जन्तु एवं वनस्पति जीवन संरक्षण विश्व के बहुत से भागों में कई कारणों से एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है विशेषकर कृषि एवं शहरी उपयोग के लिए वन्य-जीवों के आवास पर अतिक्रमण और संरक्षित प्राणियों का अनाधिकृत शिकार। चूंकि वन्य जीवन एक आकर्षण का विषय है, पर्यटन का प्राय: वन्य जीवन संरक्षण के लिए मूलाधार रूप से उपयोग किया जा सकता है (इकाई 16, TS-2 देखिए)। जैसा कि पूर्वी अफ्रीका के देशों में प्राणियों की बहुत सी घटती हुई जातियों के प्रति बहुत चिन्ता पाई जा रही है और संरक्षण के विशेष प्रयास चल रहे हैं। उदाहरणार्थ दक्षिण पूर्व एशिया में "प्रोजेक्ट टाइगर" जो वर्ल्ड वाइल्ड फण्ड (विश्व वन्य जीव कोष) द्वारा प्रायोजित है, उस क्षेत्र में बाघों की संख्या को बढ़ाने में बहुत सफल रहा है। सुन्दर वन, जो

> इस पर ध्यान देना चाहिए कि पारिस्थितिकी रूप से भंगुर कमजोर गन्तव्यों में पर्यटन उद्योग केवल इसलिए ही नहीं पनपता है वहां पर्यटन उद्योग पर्यटन संबंधी गतिविधियां या ढांचागत सुविधा विकसित करने में सक्षम है बल्कि इसलिए पनपते है कि वह अपने प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने में सक्षम हैं।

पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। बंगाल टाइगर की जनसंख्या संरक्षण का कार्य सफलता पूर्वक कर रहा है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन विकास में परिरक्षण का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

2) पर्यटन विकास में संरक्षण के महत्व का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

9.5 सहभागिता और विकास

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को एक ऐसे कारक के रूप में विकसित किया जाता है जो लोगों को एक दूसरे के निकट लाए और शान्ति एवं समझदारी में सहायक हो। पर्यटक केवल अतिथि और स्थानीय लोग केवल अतिथेय न हों। दोनों ही पक्षों की इस उद्योग में सहभागिता होनी चाहिए। हम जानते हैं कि वर्तमान पर्यटन असमानताओं पर आधारित है और वास्तविकता ये है कि ये पूर्ण रूप से आतिथेय और पर्यटकों के मध्य संवेदनशील संबन्धों में बाधा डालता है।

पर्यटन एक "स्थान" विशिष्ट एवं गहन श्रम गतिविधि है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक पर्यटक स्थल का अपना एक स्वभाव होता है जो प्राय: या तो प्राकृति आकर्षण, ऐतिहासिक महत्व या स्थानीय संस्कृति द्वारा प्रभावित होता है। वे सभी आकर्षण पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं जो अपनी प्रकृति के अनुसार मानव सम्बन्धों को नियमित कर सकते हैं क्योंकि पर्यटक सशुल्क अतिथि और स्थानीय लोग आतिथेय है।

पर्यटन के प्रति स्थानीय लोगों के व्यवहार के बारे में जानकारी प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई सामने आती है पर्यटन से अपेक्षाओं को पर्यटन से आशा लेकर विभिन्न व्यवसायिक समूहों और अन्य वर्गों के विचारों में अत्यधिक भिन्नता है इसलिए एक सामान्य सर्वे में इसे प्रस्तुत करना कठिन होता जाता है।

प्रथम श्रेणी में वह लोग सम्मिलित हैं जो निरन्तर और प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन से जुड़े लोगों के सम्पर्क में हैं और पर्यटन परिवहन, खान पान, व्यापार, दुकानों या भ्रमण एजेन्सियों आदि से जुड़े हुए हैं। चूंकि वह पर्यटन पर निर्भर हैं और शायद उसके बिना बेरोजगार हो जाएंगे अत: वह पर्यटकों का स्वागत करते हैं। उनका व्यवहार स्वभाविक आतिथ्य-सत्कार द्वारा निर्धारित नहीं होता बल्कि केवल मुद्रा कमाने की साधारण इच्छा द्वारा निर्धारित होता है।

स्थानीय लोगों के दूसरे समूह में व्यापार के ऐसे मालिक है जिनका पर्यटकों के साथ कोई निरंतर सम्पर्क नहीं होता जैसे कि निर्माण उद्योग। उनके लिए पर्यटन एक वाणिज्य का विषय है क्योंकि ये अधिकाधिक निर्माण के ठेकें लाता है। इसे जितना संभव हो अधिक से अधिक व्यवसाय और लाभ मिलना चाहिए। ये किस प्रकार मिलता है इसका महत्व उनके लिए बहुत कम है अन्त में होने वाली आय ही महत्वपूर्ण है।

तीसरी श्रेणी ऐसे जनसंख्या वर्ग की है (जैसे कृषक और वह लोग जो यात्रा के प्रमुख मार्गों पर निवास करते हैं) जो पर्यटकों के प्रत्यक्ष और निरंतर सम्पर्क में रहते हैं किन्तु वह उनसे अपनी आय के आंशिक भाग की अपेक्षा ही करते हैं। इस समूह के सदस्य पर्यटन में लाभ देखते हैं किन्तु इसे अधिक आलोचना का पात्र समझते हैं और इसके कारण होने वाली हानियों को इंगित भी करते हैं जैसे उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप और पर्यावरणीय क्षति आदि।

चौथा बड़ा समूह उन स्थानीय लोगों का है जिनका पर्यटकों से कोई सम्पर्क नहीं होता। यहां विभिन्न स्वभाव भी संभव हैं जैसे समर्थन, अस्वीकरण, रुचि या उदासीनता। इनमें उदासीनता सर्वाधिक रूप से आम है (देखिए खण्ड-1, टी. एस-2).

राजनीतिज्ञ और राजनीतिक गुट पांचवें समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह अपने देशवासियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करना चाहते हैं। शायद ही कोई ऐसा राजनीतिज्ञ हो जो या तो खुले आम या शान्तिपूर्ण ढंग से पर्यटन की वकालत आर्थिक एवं विकास दोनों ही कारणों से न करता हो। फिर भी इस सत्य का कोई भी खण्डन नहीं कर सकता कि आर्थिक कमाई और रोजगार प्रदान करने में पर्यटन का स्थानीय विकास पर बहुत गहरा प्रभाव है। सारे विश्व में कम से कम एक करोड़ लोग पर्यटन के कार्यों में लगे हुए हैं और बहुत से और भी लोग अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन पर ही निर्भर हैं। किन्तु बहुत से ऐसे क्षेत्रों में सामाजिक मूल्य बहुत अधिक चुकाना पड़ रहा है जहां बड़ा विकासीय अन्तर और परस्पर सहभागिता की कमी है। अधिकतर स्थानों पर विकास स्थानीय लोगों की राय पर थोड़ा सा विचार करके या बिना विचार किए ही बाहर से थोपा जाता है। बाहरी लोग आम तौर से स्थानीय प्रथाओं, पारिस्थितिकी या पर्यावरण के प्रति प्राय: संवेदनशील नहीं होते। इसके अतिरिक्त स्थानीय निवासियों के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग भी सीमित हो जाता है।

9.6 टिकाऊ विकास

टिकाऊ समाज वह है जो भावी पीढ़ियों की संभावनाओं को घटाए बिना उसकी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करता है। इसी प्रकार पर्यटन से ये आशा की जाती है कि संरक्षण और उपयोग के मध्य संतुलन बनाए रखेगा। सरल शब्दों में टिकाऊ पर्यटन का अर्थ है: पर्यटन उद्योग को इस प्रकार स्थापित किया जाए कि वह नकारात्मक

सामाजिक एवं पर्यावरण संघातों को कम करते हुए आर्थिक लाभों को उच्चतम सीमा तक बढ़ा सके। पर्यटन विकास को लम्बे समय तक टिकाऊ बनाने के लिए गन्तव्य स्थानों, प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण को एक निश्चित सुरक्षा प्रदान करनी होगी।

पर्यटन और पर्यावरण तथा पर्यावरणीय नियोजन एवं टिकाऊ पर्यटन विकास के मध्य घनिष्ट सम्बन्धों के महत्व को दिन प्रतिदिन अधिक मान्यता प्राप्त होती जा रही है। विश्व पर्यटन संघटन और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की संयुक्त घोषणा, जिसने पर्यटन के विषय में अन्तर-एजेन्सी समन्वयन और पर्यावरण को औपचारिक रूप दिया, घोषित करता है:

मानव के पर्यावरण के विभिन्न घटकों की सुरक्षा, वृद्धि और सुधार पर्यटन के सुव्यवस्थित विकास की मौलिक शर्तों में से हैं। इसी प्रकार, पर्यटन का राष्ट्रीय प्रबन्धन काफी हद तक मौलिक पर्यावरण, एवं सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा और विकास में योगदान दे सकता है और साथ ही जीवन की गुणवत्ता को भी सुधार सकता है।

पर्यटन वर्तमान विश्व में अत्याधिक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में से एक है। फिर भी पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों ने हाल के कुछ वर्षों में इस क्षेत्र को किसी हद तक विवादस्पद बना दिया है। ऐसा विशेष रूप से उन क्षेत्रों में हुआ है जहां पर्यटन का विकास बहुत तीव्र गति से और अधिकतर अनियोजित तथा अनियन्त्रित हुआ है। इसका परिणाम प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के रूप में सामने आया। पर्यटन और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरणों के मध्य उचित सम्बन्ध बनाना पर्यटक अभिग्राही-देशों (जहाँ पर्यटक आते हैं) और स्वयं पर्यटकों दोनों की जिम्मेदारी है WTO की 1985 की आम सभा की बैठक में पारित किए गए अधिकारों के पर्यटन विधेयक और पर्यटक संहिता में इसे और अधिक स्पष्ट किया गया है। इस वक्तव्य में निम्नलिखित धाराएं है:

- वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के हित में राज्य द्वारा पर्यटन के पर्यावरण की सुरक्षा नितान्त आवश्यक है यह एक साथ मानवीय, प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक और आर्थिक होने के कारण समस्त मानव-जाति की धरोहर है।
- मार्गों और आवासीय स्थानों पर आतिथेय प्रदान करने वाले स्थानीय समुदायों को अपने पर्यटन के संसाधनों का स्वतन्त्र रूप से उपभोग का अधिकार है।

वह पर्यटन से अपनी प्रथाओं और अपने उन समग्र, धार्मिक और अन्य सांस्कृतिक तत्वों के प्रति जो मनुष्य की विरासत का एक भाग है विवेक और आदरभाव की अपेक्षा के भी अधिकारी हैं। लचीले और भंगुर पर्यावरण के लिए अत्याधिक कड़े सुरक्षा उपाए किए जा सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति के संरक्षण के हितों को उचित वरियता प्रदान की जा सकती है विशेषकर अगर वह प्रमुख भूमि उपयोग का कार्य हो। ऐसी समझ और आदर भाव को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित विषयों पर उचित जानकारी के प्रचार और प्रसार को प्रोत्साहित करना चाहिए:

1) आतिथेय समुदायों के रीती-रिवाज, उनकी परम्परागत एवं धार्मिक प्रथाओं, स्थानीय स्तर पर वर्जित समझे जाने वाले कार्यों और पावन स्थलों और तीर्थों का आदर आवश्यक है।
2) कलात्मक, पुरातत्तवीय और सांस्कृतिक निधि की जानकारी जिन्हें सुरक्षित रखना आवश्यक है, और
3) वन्य जीव, और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को भी निश्चित रूप से सुरक्षित रखना चाहिए। पर्यटकों को अपने व्यवहार द्वारा लोगों में सदाशयता पैदा करनी चाहिए और सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए, आदि।

टिकाऊ विकास के लिए योजना की धारणा और उसके साथ ही हर प्रकार की मानवीय गतिविधियों के लिए सामान्य रूप से टिकाऊ विकास को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक से अधिक महत्व दिया जा रहा है। फिर भी ये ध्यान देने योग्य है कि टिकाऊ विकास के सम्बन्ध में विचार करना या बात करना एक बात है और कार्यान्वित करना दूसरी बात। क्योंकि पहली बात सरल है और दूसरी कठिन। आज हर राजनीतिक और पर्यटन प्रोत्साहक पर्यावरण विशेषज्ञ होने का दावा करता है और हर एक को असली और नकली पर्यावरण विशेषण की पहचान करने में सतर्कता बरतनी चाहिए। कुछ अन्य पक्ष इकाई-10 में वर्णित हैं।

बोध प्रश्न 3

1) विकास में भागीदारी वाले पर्यटन के महत्व को समझाइए।

.....

.....

.....

2) टिकाऊ विकास क्या है?

.....

.....

.....

9.7 सारांश

- पर्यटन को नियन्त्रित विकास के रूप में नियोजित करना चाहिए ताकि वह कोई गंभीर पर्यावरणीय अथवा सामाजिक-सांस्कृतिक समस्या उत्पन्न न करे और उसे पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए उपयोग किया जाता रहे,
- पर्यटन विकास को देश के किसी क्षेत्र विशेष के विशिष्ट अभिलक्षणों के अनुकूल होना चाहिए। इस विकास प्रक्रिया में समुदाय के निवासियों की सबसे अधिक भागीदारी होनी चाहिए और पर्यटन से प्राप्त अधिक से अधिक संभव लाभ स्थानीय समुदायों को प्राप्त होना चाहिए।
- पर्यटन विकास को देश की समग्र विकास योजना में जोड़ देना चाहिए तथा इसे अन्य आर्थिक क्षेत्रों से संयोजित कर देना चाहिए। इस स्थिति में अधिक से अधिक संभव सन्तुलित अर्थव्यवस्था की स्थापना हो सकेगी।
- मनोरंजन और सैर सपाटे के लक्ष्यों की प्राप्ति के अतिरिक्त देशीय पर्यटन को राष्ट्रीय आय के विशेषत: शहरी ओर समृद्ध क्षेत्रों से ग्रामीय व अल्प विकसित इलाकों में पुनर्वितरण के लिए उपभोग करना चाहिए। पर्यटन को देश के विभिन्न और समाजों के नागरिकों में प्रकृति और एक दूसरे के बारे में समझ को बढ़ाने के लिए उपयोग करना चाहिए।

9.8 शब्दावली

परिरक्षण : बचाव या रख रखाव

संरक्षण : क्षीण हो जाने या लुप्त हो जाने से बचाना

टिकाऊ : जो लम्बे समय तक जारी रह सकता हो

9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) राजनैतिक आर्थिक दृष्टिकोण पर्यटन उद्योग की समस्याओं की खोज के दौरान उसके निहित लक्षणों का पता लगाता है। ये पर्यटन उद्योग के असंतुलन को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

2) व्यवहारिक दृष्टिकोण स्वयं अपने शब्दों में पर्यटन विकास के गुणों और अवगुणों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। वह उन प्रभावों पर विचार नहीं करता जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में और एक देश से दूसरे देश में बदलता रहता है।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 9.3 देखिए।

2) भाग 9.4 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 9.5 देखिए।

2) भाग 9.6 देखिए।